आरती – श्रीमद्भागवत महापुराणजी की

आरती अति पावन पुरान की, धर्म भक्ति विज्ञान खान की।।
महापुराण भागवत निरमल, शुक–मुख विगलित निगम–कल्प फल।।
परमानंद सुधा रसमय–कल, लीला–रति–रस रसनिधान की।।
कलिमल–मथनि त्रिताप–निवारनी, जन्ममृत्यु मय भव भय हारिणि।।
सेवत सतत सकल सुखकारिनी, सुमहौषधि हरि–चरित–गानकी।।
विषय–विलास–विमोह–विनासिनि, विमल विराग विवेक विकासिनि।।
भगवत्–तत्व–रहस्य–प्रकासिनि, परम ज्योति परमात्म ज्ञान की।।
परमहंस मुनि मन उल्लासिनि, रसिक–हृदय रस–रास–विलासिनि।।
भक्ति–मुक्ति रति–प्रेम सुदासिनि, कथा अकिंचन प्रिय सुजान की।।

आरती – रामायणजी की

आरती श्री रामायणजी की, कीरति कलित ललित सिया–पी की।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद, बालमीक विज्ञान विसारद।।
सुक सनकादि शेष अरू सारद, बरनि पवनसुत कीरति नीकी।। 1।।
गावत वेद पुरान अष्टदस, छओ शास्त्र सब ग्रंथन को रस।।
मुनिजन धन संतन को सरबस, सार अंस संमत सबही की।। 2।।
गावत संतत संभु भवानी, अरू घटसंभव मुनि बिग्यानी।।
व्यास आदि कविबर्ज बखानी, कागभुषुंडि गरूड़ के ही की।। 3।।
कलिमल–हरनि विषय रस फीकी, सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।।
दलन रोग भव भूरि अमी की, तात् मात् सब बिधि तुलसी की।। 4।।